दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनाँक : 27-06-2022

प्रकाशनार्थ

आज दिनाँक 27 जून 2022 को दिग्विजयनाथ पी. जी. कॉलेज गोरखपुर एवं साइंस टेक इंस्टीटूट लखनऊ के संयुक्त तत्वाधान में ज़ूम एप के माध्यम से आयोजित सप्तदिवसिय फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के छठवें दिन मुख्य वक्ता प्रोफ विनीत कुमारएबाबा साहब भीम राव अम्बेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ ने "वैज्ञानिक जर्नल खोजकए नैतिकता: पेटेंट, कॉपीराइट और साहित्यिक चोरी" विषय पर बोलते हुए कहा कि नॉलेज बूम और वेब पर आसानी से उपलब्ध सामग्री के युग में, साहित्यिक चोरी से बचना चुनौतीपूर्ण है। शब्द और विचार हर जगह प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इस प्रकार, नकल या अधिक सटीक रूप से, साहित्यिक चोरी सामग्री निर्माण के दैनिक पाठ्यक्रम में शामिल हो गई है। लेकिन साहित्यिक चोरी से कैसे बचा जाए, इस बारे में कई अनिश्चितताओं के साथ, यह सुनिश्चित करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है कि आप दोनों परिभाषाओं के साथ-साथ अपने काम के भीतर साहित्यिक चोरी के नतीजों से अवगत हैं।कभी-कभीए साहित्यिक चोरी एक अपरिहार्य स्थिति बन जाती है जहां आप वाक्यांशों या तथ्यों और विचारों को ष्उधार' लेने के लिए बाध्य होते हैं। लेकिन, समस्या तब उत्पन्न होती है जब आप मूल स्रोत को ठीक से स्वीकार नहीं कर रहे होते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप साहित्यिक चोरी से बच रहे हैं, ये परिस्थितियाँ उचित उद्धरण, संदर्भ, उद्धरण या व्याख्या की माँग करती हैं। यदि आप इनका पालन नहीं करते हैंए तो आप केवल अनैतिक सामग्री की कॉपी ' कर रहे हैं, दंड को आकर्षित कर सकते हैंए और यहां तक कि कानूनी कार्यवाही भी शुरू कर सकते हैं। हमें इस बारे में अधिक जागरूक होने की आवश्यकता है कि ष्साहित्यिक चोरी शब्द वास्तव में क्या परिभाषित करता है। हमें कानूनी और नैतिक दोनों दृष्टिकोणों को समझने और समझने की कोशिश करनी चाहिए और साहित्यिक चोरी से बचने के तरीकों को अपनाकर साहित्यिक चोरी को रोकना चाहिए।

सरल शब्दों में यह किसी और के काम को अपना होने का दावा कर रहा है। जब उपयोगकर्ता मूल स्रोत को ठीक से स्वीकार नहीं कर रहा है, तो इसका मतलब है कि वह काम को अपना मान रहा है। यह दूसरे की संपत्ति को चुराने जैसा है।

उन्होंने आगे बोलते हुए कहा कि साहित्यिक चोरी से बचने के लिए विशिष्ट तरीके हैं जो विशेषज्ञों का सुझाव है कि इससे होने वाले उत्पीड़न से दूर रहें। साहित्यिक चोरी को रोकने के तरीके पर विचार करते समय, उचित उद्धरण, उद्धरणों का उपयोग, व्याख्या, साहित्यिक चोरी का पता लगाने वाले साहित्यिक जांचकर्ताओं का उपयोग करने जैसी तकनीकें हैं, और अन्य जिन्हें साहित्यिक चोरी को रोकने के लिए अपनाया जा सकता है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ धर्मेंद्र यादव ने, मुख्य वक्ता सहित सभी का स्वागत डॉ परीक्षित सिंह नेएअभार ज्ञापन प्रोफ ओम प्रकाश सिंह, प्राचार्य, दिग्विजयनाथ पी.जी. कॉलेज गोरखपुर ने एवं अध्यक्षता श्रीमती श्वेता सिंह, लखनऊ ने किया।

इस ऑनलाइन कार्यक्रम में डॉ सत्येंद्र प्रताप सिंह, डॉ धीरेंद्र सिंह, श्री अनिल भाष्कर, डॉ इंद्रेश पाण्डेय, डॉ शैलेश सिंह, श्री पवन कुमार पाण्डेय, महाविद्यालय के शिक्षक, अन्य महाविद्यालयों के शिक्षक सहित 231 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

उक्त जानकारी महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ शैलेश कुमार सिंह ने दिया।

डॉ शैलेश कुमार सिंह
मीडिया प्रभारी